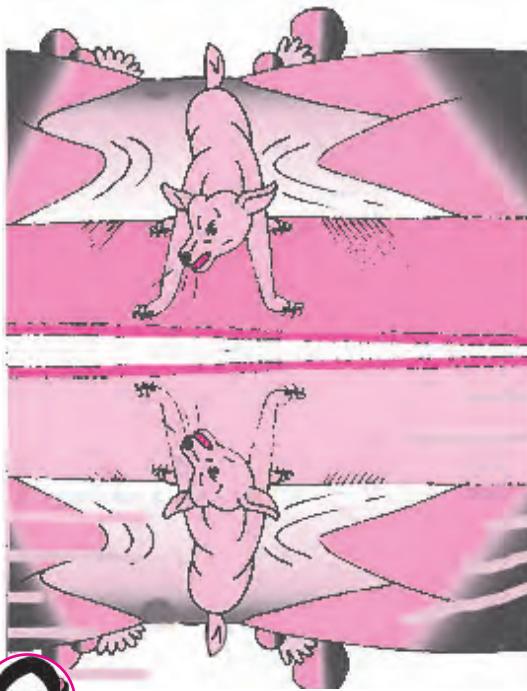


● पढ़ो और गाओ :



२. लालची कुत्ता

एक कुत्ता जो बहुत लालची,
भाग चला लेकर रोटी,
पड़ी रास्ते में उसके इक,
नदी बहुत जो थी छोटी ।
जाने को उस पार नदी के,
रखा था पतला पटरा,
सँभल-सँभलकर चलना पड़ता,
वरना था पूरा खतरा ।
पानी में देखा इक कुत्ता,
उसके जैसा था जो दीखता,



उसके जैसी मुँह में रोटी,
दीख रही थी मोटी-मोटी ।
कैसे रोटी उसकी पाऊँ,
उसका हिस्सा भी हथियाऊँ ?

भौंका सोच बेभानी में,
रोटी जा गिरी पानी में ।
भौंचकका-सा लगा देखने;
खड़ा रहा मुँहबाय,
बच्चो ! इसको कभी न भूलो;
लालच बुरी बलाय ।



-प्रभाकर भट्ट



पढ़ो और विरामचिह्नों को समझो :

पूर्णविराम (।), अल्पविराम (,), प्रश्नवाचक (?) , विस्मयादिबोधक (!), अर्धविराम (;)

- | | |
|-----------------------------|--|
| १. नदी बहुत जो थी छोटी । | ३. भौंचकका-सा लगा देखने; खड़ा रहा मुँहबाय, |
| २. उसका हिस्सा भी हथियाऊँ ? | ४. बच्चो ! इसको कभी न भूलो; लालच बुरी बलाय । |

उचित उच्चारण, आरोह-अवरोह एवं लय-ताल के साथ कविता का मुख्य वाचन करें। विद्यार्थियों को ध्यान से सुनने के लिए कहें। सामूहिक, गुट एवं एकल रूप में अनुवाचन कराएँ। उनसे लालच जगाने वाली वस्तुओं के नाम कहलवाएँ। अन्य गीत गवाएँ।